प्रातः क्लास 27/12/68 ओम शान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। यह तो बच्चे समझते होंगे हम अभी ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्माकुमार–कुमारियां हैं, फिर बाद में होने हैं देवी–देवताएं। यह तो तुम्हीं समझते हो। दूसरा कोई नहीं समझते। तुम जानते हो हम ब्रह्माकुमार–कुमारियां बेहद की पढ़ाई पढ़ रहे हैं। 84 जन्मों की पढ़ाई भी पढ़ी, सृष्टि चक्र की पढ़ाई भी पढ़ी। फिर तुमको यह शिक्षा मिलती है कि पवित्र बनना है। यहां बैठे तुम बच्चे बाप को याद तो जरूर करते होंगे पावन बनने लिये। अपने से पूछो हम सच्च2 बाप की याद में बैठे थे या माया रावण बुद्धि को और तरफ ले गई। बाप ने कहा है मामेकं याद करो तो पाप कटें। अभी अपन से पूछना है हम बाप की याद में रहे या बुद्धि कहां चली गई। स्मृति रहना चाहिए ना कितना समय हम बाप की याद में रहे। कितना समय हमारी बुद्धि कहां2 गई। अपनी अवस्था को देखो। जितना टाइम बाप को याद करेंगे, उनसे ही पावन बनेंगे। जमा और घाटा का पोतामेल रखना है। आदत होगी तो याद रहेगी। लिखते रहेंगे। डायरी तो सभी के पॉकिट में रहती ही है। जो भी व्यापार वाले होते हैं उन्हों की है हद की डायरी। तुम्हारी है बेहद की। तो तुमको अपना चार्ट नोट करना है। बाप का फरमान है धंधा आदि सभी कुछ करो; परंतु कुछ समय निकाल मेरे को याद करो। अपने फायदे को देखो। फायदा बढ़ाते जाओ। घाटा न डालो। तुम्हारी युद्ध तो है ना। सेकण्ड में फायदा और सेकण्ड में घाटा। बड़ा तुर्त मिलता है और झट मालूम पड़ता है हमने फायदा किया या घाटा। तुम व्यापारी हो ना। कोई विरला यह व्यापार करे। स्मृति से है फायदा। विस्मृति से है घाटा। यह अपनी जांच करनी है। जिनको ऊंच पद पाना है उनको तो ओना रहता है देखें हम कितना समय विस्मृति में रहे। यह तो तुम बच्चे जानते हो हम सभी आत्माओं का बाप पतित–पावन है। हम असल में आत्माएं हैं; अपने घर से आये हैं यह शरीर लेकर पार्ट बजाते हैं। शरीर विनाशी है, आत्मा अविनाशी है। संस्कार सभी आत्मा में रहती है। बाप पूछते भी हैं हे आत्मा याद करो। इस जन्म के छोटेपन में कोई उल्टा काम तो नहीं किया है। याद करो। 3/4 वर्ष से लेकर याद तो रहती है ना। हमने छोटेपन में कैसे गुजारा है। क्या2 किया। कोई भी बात दिल को अन्दर खाती तो नहीं है। याद करो। सतयुग में तो पाप–कर्म होते ही नहीं तो पूछने की भी बात नहीं रहती। यहां तो पाप होते ही हैं। मनुष्य जिसको पुण्य का काम समझते हैं वह भी पाप ही है, यह है ही पापात्माओं की दुनियां। तुम्हारा लेन–देन भी पापात्माओं से ही है। पुण्यात्मा यहां है ही नहीं। पुण्यात्माओं की दुनियां में फिर एक भी पापात्मा नहीं। पापात्माओं की दुनियां में एक भी पुण्यात्मा नहीं हो सकता। जिन गुरुओं के चरणों में गिरते हैं वह सभी कोई पुण्यात्मा नहीं हैं। यह तो हैं ही कलियुगी सो भी तमोप्रधान। तो इसमें कोई पुण्यात्मा होना असम्भव है। पुण्यात्मा बनने लिये ही बाप को बुलाते हो कि आकर हमको पावन आत्मा बनाओ। ऐसे नहीं कोई बहुत दान–पुण्य आदि करते हैं, धर्मशाला आदि बनाते हैं तो कोई पुण्यात्मा हैं। रहेंगे तो पापात्माएं ना। शादियों आदि के लिये हॉल आदि बनाते हैं। सभी पापात्माएं हैं ना। यह सभी समझने की बातें हैं। यह है ही रावण राज्य, पापात्माओं की दुनियां। इन बातों को सिवाय तुम्हारे और कोई नहीं जानते हैं। रावण भल है; परन्तु उनको भी पहचानते थोड़े ही हैं। शिव का चित्र भी है; परन्तु पहचानते थोड़े ही हैं। बड़े2 लिंग आदि बनाते हैं समझते हैं इतना बड़ा होगा, फिर भी कह देते हैं नाम रूप से न्यारा है। सर्वव्यापी है। इसलिये बाप ने कहा है यदा यदा..... भारत में ही शिवबाबा की ग्लानि होती है। जो बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं उनकी कितनी ग्लानि तुम करते हो। तुम्ही जब पुजारी बनते हो तो पूज्य बाप को खूब गाली देते हो मनुष्य मत पर चलकर। मनुष्य मत और ईश्वरी मत का किताब भी है। यह सभी के पास होनी चाहिए। यह तो तुम्हीं जानते हो और समझते हो। हम श्रीमत पर देवता बनते हैं। रावण मत पर फिर आसुरी मनुष्य बन जाते हैं। मनुष्य मत को आसुरी मत कहा जाता है। आसुरी कर्तव्य ही करते रहते हैं। मूल बात है कि ईश्वर को सर्वव्यापी कह देते हैं। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, कुत्ते, बिल्ले में है। तो कितने आसुरी छी छी बन जाते हैं। तुम्हारी आत्मा भी कच्छ–मच्छ अवतार नहीं

लेती। मनुष्य तन में ही आती है। अभी तुम समझते हो हम कोई कच्छ–मच्छ अवतार थोड़े ही बनते हैं। 84 लाख योनि थोड़े ही लेते हैं। अभी तुमको बाप की श्रीमत मिलती है बच्चे तुम 84 जन्म लेते हो। 84 और 84 लाख का क्या परसेन्टेज कहेंगे। झूठ तो माना झूठ सच्च की रत्ती नहीं। इनका भी अर्थ समझना चाहिए ना। बरोबर सच्च की रत्ती नहीं। भारत का हाल देखो क्या है। भारत सच्च खण्ड था जिसको हेविन कहा जाता था। कोई साधु–संत आदि सुने तो उनका अन्दर चलता रहेगा यह क्या कहते हैं हमारे वेद–शास्त्र आदि सभी झूठे हैं और भक्ति माना ही दुर्गति। ज्ञान से सद्गति होती है। देखने में तो मनुष्य वही आते हैं; परन्तु वह है दैवीगुण वाले और वह हैं आसुरी गुण वाले। क्योंकि माया का राज्य है। आसुरी सम्प्रदाय कहेंगे। कितना कड़ा अक्षर है। वह है दैवी दुनियां। देवताओं का राज्य चलता है ना। बाप ने समझाया है यह ल0ना0 दी फर्स्ट, दी सेकण्ड थर्ड कहा जाता है। जैसे एडवर्ड दी फर्स्ट सेकण्ड थर्ड होता है ना। पहली पीढ़ी फिर दूसरी पीढ़ी ऐसे चलती है। तुम्हारे में भी पहले होता है सूर्यवंशी राज्य फिर चन्द्रवंशी। बाप ने चक्र का राज़ भी अच्छी रीत समझाया है। तुम्हारे शास्त्रों में यह बातें नहीं थी। कोई2 शास्त्रों में थोड़ी लकीरें आदि लगाई हुई हैं; परन्तु उस समय जिन्होंने पुस्तक बनाई है उन्होंने कुछ समझा नहीं है। बाबा भी जब बनारस में गया था उस समय यह दुनियां अच्छी ही नहीं लगती थी। फिर वहां सारी दिवालों पर लीका पहनता था। बाबा यह कराता था; परन्तु हम तो उस समय बेबी थे ना। तो पूरा समझ में नहीं आता था। बस कोई है जो हम से कराता है। विनाश देखा तो अन्दर में खुशी भी थी। रात को सोते थे तो भी जैसे उड़ते रहते थे; परन्तु कुछ समझ में नहीं आता था। ऐसे लीक डालते रहते हैं। कोई ताकत है जिसने प्रवेश किया है। हम वन्डर खाते थे। पहले तो धंधा आदि करते थे फिर क्या हुआ। कोई तो देखते थे और झट ध्यान में चले जाते थे। कहता था यह हुआ क्या जिनको देखता हूं उनकी आंखें बन्द हो जाती हैं। पूछते थे क्या देखा? तो कहते थे–वैकुण्ठ देखा, कृष्ण देखा। तो यह सभी समझने की बातें हुई ना। इसलिये सभी कुछ छोड़कर बनारस चले गये समझने लिये। सारा दिन बैठा रहता था पेंसिल और दीवार, और कोई धंधा ही नहीं। बेबी था ना। तो ऐसे2 जब देखा तो समझा अभी यह कुछ करना न है। धंधा आदि छोड़ना पड़े, खुशी थी यह गधाई छोड़नी है। रावण राज्य है ना। रावण के ऊपर गदहे का सिर दिखाते हैं। तो ख्याल हुआ यह राजाई नहीं गधाई है। रावण सम्प्रदाय है तो गधे जैसे बुद्धि है। गधा जंगली होता है ना। घड़ी घड़ी मिट्टी में लोट–पोटकर धोबी के कपड़ों को खराब कर देते हैं। बाप भी कहते हैं तुम क्या थे अभी तुम्हारी अवस्था क्या हो गई है। मूत पलिति बन गये हो। रावण सम्प्रदाय, टट्टू बन गये हो। यह बाप बैठ समझाते हैं। यह (दादा) भी समझते हैं और समझाते रहते हैं। दोनों का चलता रहता है। ज्ञान में जो अच्छी रीत समझाते हैं उनको तीखे कहेंगे। नम्बरवार तो है ना। बाप भी समझाते हैं, यह दादा भी समझाते हैं। तुम बच्चे भी समझाते हो। यह राजधानी स्थापन हो रही है। जरूर नम्बरवार पद पावेंगे। आत्मा ही अपना पार्ट कल्प2 का बजाती है। सभी एक समान ज्ञान नहीं उठावेंगे। यह स्थापना ही वन्डरफुल है। दूसरे कोई स्थापना का ज्ञान थोड़े ही देते हैं। समझो सिक्ख धर्म की स्थापना हुई; क्योंकि कायदे अनुसार सिर्फ़ सिक्ख धर्म की ही स्थापना हुई है। बाप ने समझाया है शुद्ध आत्मा ने आकर प्रवेश किया। जैसे इनमें बाप ने प्रवेश किया है। उनमें बाप तो नहीं प्रवेश करते; परन्तु शुद्ध आत्मा ने आकर प्रवेश किया। उस समय के बाद ही सिक्ख धर्म की स्थापना हुई। उन्हों का हेड कौन? गुरूनानक। उसने आकर सृष्टि का ज्ञान तो नहीं दिया। वह क्या बोलेंगे, क्या ज्ञान देंगे! यह तो पीछे कहते हैं गुरूनानक ने जप साहब बनाया। पहले तो नई सुप्रीम आत्मा आकर प्रवेश करती है। गुरूनानक की आत्मा ने प्रवेश किया। वह पहले तो जरूर सुप्रीम ही होंगे; क्योंकि पवित्र आत्मा होती है। पवित्र को सुप्रीम कहते हैं; परन्तु वास्तव में सुप्रीम एक बाप को ही कहा जाता है। परन्तु वह भी धर्म स्थापन करते हैं तो सुप्रीम कहेंगे; परन्तु नम्बरवार। पीछे2 आते हैं। 500 वर्ष हुआ तो एक आत्मा आई, आकर के सिक्ख धर्म स्थापन किया। उस समय ग्रन्थ कहां से आवेगा। जरूर जप साहब सुखमणि बनाई होगी। क्या शिक्षा देते हैं। उमंग आती है तो बाप

की बैठ महिमा करते हैं। बाकी यह पुस्तक आदि तो बाद में बनते हैं। जबकि बहुत हों। पढ़ने वाले भी तो चाहिए ना। सभी के शास्त्र पीछे बने होंगे। तब भक्ति मार्ग शुरू हो तब शास्त्र आदि पढ़े। ज्ञान चाहिए ना। पहले सतोप्रधान होंगे फिर सतो–रजो–तमो होंगे। जब बहुत वृद्धि हो जाती है तब महिमा हो और शास्त्र आदि बनें, नहीं तो वृद्धि कौन करे? फालोअर्स बने ना। सिक्ख धर्म की आत्मा आवे जो फॉलो करे। इसमें बहुत टाइम चाहिए। नई आत्मा जो आती है उनको दुःख तो हो नहीं सकता। लॉ नहीं कहता। आत्मा सतोप्रधान से सतो–रजो–तमो में आवे तब दुःख हो। लॉ भी है ना। यहां हम मिक्सअप हैं। रावण सम्प्रदाय भी है राम सम्प्रदाय भी है। अभी सम्पूर्ण बने नहीं हैं। सम्पूर्ण बनेंगे तो फिर शरीर छोड़ देंगे। कर्मातीत अवस्था वाले को कोई दुःख हो न सके। वह इस छी छी दुनियां में रह न सके। वह चले जावेंगे। बाकी जो रहेंगे वह कर्मातीत न बने ..... सभी को तो कर्मातीत हो न सके। भल विनाश होता है तो भी कुछ बचेंगे। प्रलय नहीं होती। गाते भी हैं (राम) गयो रावण गयो..... रावण का बहु परिवार था। हमारा परिवार तो थोड़ा है। वह कितने ढेर धर्म हैं। वास्तव में सबसे बड़ा हमारा परिवार होना चाहिए। क्योंकि देवी–देवता धर्म सबसे पहला है। अभी तो सभी मिक्सअप हो गये हैं। तो क्रिश्चयन बहुत हो गये हैं। जहां मनुष्य सुख देखते हैं, पोजीशन देखते हैं तो उस धर्म के बन जाते हैं। जैसे2 पोप आता है तो बहुत क्रिश्चयन बनते हैं, फिर वृद्धि भी बहुत होती है। सतयुग में तो है ही एक बच्चा और एक बच्ची। और कोई धर्म की ऐसी वृद्धि वृद्धि नहीं होती। अभी देखो सभी से जास्ती क्रिश्चयन तीखे हैं। जो बहुत बच्चे पैदा करते उनको इनाम मिलता है। क्योंकि उन्हों को तो मनुष्य चाहिए ना। जो मिलिट्री लश्कर काम में आवे। है तो सभी क्रिश्चयन। रशिया, अमेरिका सभी क्रिश्चयन्स हैं। यह कहानी है दो बिल्ले लड़े मक्खन बन्दर खा गया। यह सभी ड्रामा बना हुआ है। दोनों को आपस में लड़ाकर बादशाही तुम ले ते हो। आगे तो हिन्दू–मुसलमान इकट्ठे रहते थे। जब अलग हुये हैं तो पाकिस्तान की नई राजाई बड़ी हो गई। यह भी ड्रामा बना हुआ है। दो लड़ेंगे तो बारूद लेंगे धंधा आदि होगा। ऊंच ते ऊंच उन्हों का यह धंधा है; परन्तु ड्रामा में भावी ही तुम्हारी है। 100% सरटेन है तुमको कोई जीत नहीं सकते। बाकी सभी खत्म हो जावेंगे। तुम जानते हो नई दुनियां में हमारा राज्य होगा। जिसके लिये तुम पढ़ते हो लायक बनते हो। तुम लायक थे, अब नालायक बन पड़े, अब लायक बनना है। गाते भी हैं पतित पावन आओ; परन्तु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। जो कुछ कहते समझते नहीं हैं। जंगली जानवरों मिसल हैं। यह है ही सारा जंगल। अनेक प्रकार के जानवर रहते हैं। जो कुछ कहते हैं; परन्तु खुद ही समझते नहीं हैं। अब बाप आये हैं आकर कांटों के जंगल गार्डेन ऑफ फ्लॉवर बनाते हैं। वह है डिटी वर्ल्ड यह है डेविल वर्ल्ड। तुम नम्बरवन डेविल थे। नम्बर वन डिटी से नम्बर डेविल बन गये। अब बाप फिर डिटी बनाते हैं। बुद्धि से समझते हो हम कैसे विकारी छी–छी थे। डिटी वर्ल्ड सो डेविल, डेविल वर्ल्ड सो डिटी वर्ल्ड। 5000 वर्ष का चक्र है। इसमें डिटी वर्ल्ड, डेविल वर्ल्ड सभी आ गये। तुम अभी समझते हो हम अपने धर्म को भूल धर्म भ्रष्ट हुये हैं। तो सभी कर्म विकर्म ही होता है। कर्म–विकर्म–अकर्म की गति कल तुमको बाबा समझाकर गये थे। तुम समझते हो बरोबर हम कल ऐसे थे आज ऐसे बनते हैं। नजदीक है ना। बाप कहते हैं कल तुमको देवता बनाया था राज भाग दिया था, फिर सब कहां किया। तुमको स्मृति आती है हमने भक्ति मार्ग में कितना धन गवांया है। कल की बात है ना। लाखों वर्ष कल्प की आयु कहना कितना गपोड़ा है। अभी तुमको समझ पड़ी है। रावण राज्य में कितना गपोड़ा लगाते रहते हैं। बाप तो आकर तिरी पर बहिस्त देते हैं यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। बाप ने भी समझाया है आंखें कितना धोखा देती हैं। क्रिमनल आई को ज्ञान से सिविल बनाना है। बाप भी बच्ची को गंदा कर देते हैं। गुरू का भी नाम निशान बताते हैं। बाप के पास तो सभी समाचार आते हैं ना। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

बाप और वर्सा याद है ?